केरल मन्दिर के पारम्परिक भित्ति-चित्र

सन्दर्भ- जिले कोट्टयम्,त्रिचुर एवं पथानामथिट्टा (१६वीं-१८वीं शती)

डी0ई0आई0, डीम्ड यूनिवर्सिटी, दयालबाग़, आगरा से

चित्रकला में शोध प्रबन्ध की

रूपरेखा

शोध निर्देशिका : संकाय प्रमुख की संस्तुति :

प्रो0 रागिनी रॉय
विभागाध्यक्ष, ड्राइंग एवं पेण्टिंग विभाग,
विभाग,कला संकाय, डी.ई.आई.,आगरा।

प्रो0 उर्मिला आनन्द
विभागाध्यक्ष, संस्कृत
कला संकाय, डी.ई.आई.,आगरा।

शोध छात्रा :

कु. अंशुली शुक्ला

ड्राइंग एवं पेण्टिंग विभाग,

कला संकाय, डी.ई.आई., आगरा।

२०१३

केरल मन्दिर के पारम्परिक भित्ति-चित्र

सन्दर्भ- जिले कोट्टयम्, त्रिचुर एवं पथानामथिट्टा (१६वीं-१८वीं शती)

विषय सूची

भूमिका	केरल की भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
प्रथम अध्याय	केरल में पारम्परिक भित्ति–चित्रों का उद्भव एवं विकास
द्वितीय अध्याय	*एट्टुमान्नूर महादेव मन्दिर, जिला कोट्टयम् (16वीं शती)*
	1.1 एट्टुमान्नूर महादेव मन्दिर का परिचय
	1.2 मन्दिर के चित्रों का वर्णन एवं शैलीगत विशेषताऐं
तृतीय अध्याय	*त्रिप्रयर रामा मन्दिर, जिला त्रिचुर (लगभग 16वीं शती)*
	2.1 त्रिप्रयर रामा मन्दिर का विवरण
	2.2 मन्दिर के चित्रों का कलात्मक परिचय तथा विशेषताऐं
चतुर्थ अध्याय	*परुमाला वालिया पनयन्नारकाउ देवी मन्दिर, जिला पथानामथिट्टा (16वीं शती उत्तरार्ध)*
	3.1 परुमाला वालिया पनयन्नारकाउ देवी मन्दिर का परिचय
	3.2 मन्दिर के चित्रों की स्थिति एवं उनका शैलीगत विवरण
पंचम् अध्याय	*पुण्डारिकापुरम् विष्णु मन्दिर, जिला कोट्टयम् (17वीं शती)*
	4.1 पुण्डारिकापुरम् विष्णु मन्दिर की स्थिति
	4.2 मन्दिर के चित्रों का परिचय एवं कलात्मक विशेषताऐं
षष्ठम् अध्याय	*वेंकम महादेव मन्दिर, जिला कोट्टयम् (18वीं शती उत्तरार्ध)*
	5.1 वेंकम महादेव मन्दिर का विवरण
	5.2 मन्दिर के चित्रों का वर्णन एवं शैलीगत विशेषताऐं
सप्तम् अध्याय	*पाण्डवाथ शास्ता मन्दिर, जिला कोट्टयम् (18वीं शती)*
	6.1 पाण्डवाथ शास्ता मन्दिर का परिचय

6.2 मन्दिर के चित्रों की स्थिति एवं उनका विवरण

6.3 चित्रों की कलात्मक विशेषताऐं

अष्टम् अध्याय जिले कोट्टयम्, त्रिचुर एवं पथानामथिट्टा मन्दिरों का तुलनात्मक अध्ययन।

उपसंहार

सन्दर्भ सूची

चित्र सूची

शोध का उद्देश्य

मेरे शोध प्रबन्ध की रूपरेखा का विषय *"केरल मन्दिर के पारम्परिक भित्ति–चित्र सन्दर्भ– जिले कोट्टयम्, त्रिचुर एवं पथानामथिट्टा (१६वीं–१८वीं शती)"* है। केरल जो कि भारत के दक्षिण में स्थित है। इस स्थान की जानकारी मुझे मेरे पिताजी के माध्यम से मिली जिन्होंने नौकरी के दौरान यहाँ कुछ समय बिताया है। केरल के प्राकृतिक सौन्दर्य, सांस्कृतिक त्यौहारों, मन्दिर एवं साक्षरता जैसे विषयों पर की गई चर्चाओं ने मेरे मस्तिष्क पर अपनी गहरी छाप छोड़ी। केरल में भ्रमण दौरान यहाँ के मन्दिरों से अधिक प्रभावित हुई क्योंकि मैं भित्ति चित्रण विषय से जुड़ी हुई हूँ इसी कारणवश केरल के मन्दिरों में चित्रित पारम्परिक भित्ति–चित्रों की ओर अधिक आकर्षित हुई तथा मैंने यह पाया कि इन सभी चित्रों में से कुछ चित्र ही प्रकाशित हैं अतः मैंने इस विषय को ही अपने शोध प्रबन्ध हेतु चयन किया जिसके माध्यम से मैं भारतीय चित्रकला के उज्जवल इतिहास में कला प्रेमियों को केरल के मन्दिरों में चित्रित पारम्परिक चित्रों के विशेष योगदान से अवगत कराने का प्रयास करना चाहती हूँ।

शोध का विषय

केरल मन्दिर के पारम्परिक भित्ति–चित्र

सन्दर्भ– जिले कोट्टयम्, त्रिचुर एवं पथानामथिट्टा (१६वीं-१८वीं शती)

केरल भारत का एक छोटा–सा राज्य है। यह दक्षिण पश्चिम में अरब सागर तथा पश्चिमी घाटों पर स्थित है। इसके उत्तर पूर्व में कर्नाटक, पूर्व में तमिलनाडु तथा दक्षिण में हिन्द महासागर है। *तिरुवनंतपुरम* केरल की राजधानी है, जिसे *त्रिवेन्द्रम* नाम से भी जाना जाता है। यह एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल है। 'मलयालम' यहाँ मुख्य भाषा के रूप में बोली जाती है। केरल अपने सुनहरे तटों, झीलों पहाड़ियों, नारियल के वृक्षों व राजसी झरनों के लिये विख्यात हैं जिसका प्रभाव यहाँ स्थित मन्दिरों के भित्ति–चित्रों में देखा जा सकता है।

केरल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अनुसार जब भारत आज़ाद हुआ, उस समय केरल में दो देशी रियासतें थीं। त्रावणकोर तथा कोचीन। मालाबार जो कि मद्रास प्रान्त का हिस्सा था, वह ब्रिटिश शासन के अधीन था। त्रावणकोर तथा कोचीन रियासतों को मिलाकर 1 जुलाई, सन् 1949 को त्रावणकोर, कोचीन राज्य बनाया गया तथा राज्यों के पुर्नगठन के अर्न्तगत त्रावणकोर–कोचीन राज्य और मालाबार को मिलाकर 1 नवम्बर, सन् 1956 को केरल राज्य बनाया गया।[1]

केरल सांस्कृतिक दृष्टि से सौन्दर्य के साथ–साथ शाश्वत आनंद की भूमि है। यह अपनी सदियों पुरानी विरासत और परम्परा के लिए स्मरणीय है। यहाँ की संस्कृति अद्वितीय है, जो कि भिन्न–भिन्न धार्मिक परिवेशों को धारण किये हुए है। यह कला, वास्तुकला, भाषा, साहित्य तथा संस्कृति के हर क्षेत्र में विशिष्ट दृष्टिकोण ग्रहण किये हुए है।

केरल में राष्ट्रीय पारम्परिक शास्त्रीय प्रदर्शन कला *'कथकली'* प्रसिद्ध नृत्य नाटक है जो लगभग 500 वर्ष पुराना है जिसका प्रभाव हमें भित्ति–चित्रों में दिखाई

---

[1]मात्यु, मामन. ,*मनोरमा इयर बुक,* पृष्ठ सं0 759, मलयाला मनोरमा प्रेस, कोट्टयम्, 2011.

देता है। 'कथकली' का विख्यात केन्द्र 'कलामण्डलम्' त्रिचुर (जिसे त्रिश्शूर नाम से भी जाना जाता है) जिले में स्थित है। *'ओणम'* यहाँ का विशिष्ट पर्व है, जो कि फसल कटने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इसके अतिरिक्त 'नौका दौड़' तथा 'पूरम्' त्यौहार भी प्रसिद्ध हैं।

मन्दिर यहाँ की सांस्कृतिक विरासत का परिचय देते हैं। केरल के कई प्राचीन मन्दिरों में पारम्परिक भित्ति–चित्र भी दर्शनीय हैं। यहाँ वर्तमान समय में भी भित्ति–चित्रों का चित्राकंन देखने को मिलता है।

यहाँ के प्रमुख मन्दिर– कोट्टयम् जिले में– वेंकम महादेव, एट्टुमान्नूर महादेव, पाण्डवाथ शास्ता, पुण्डारिकापुरम् विष्णु, थिरुन्नकारा महादेव, त्रिचुर जिले में– त्रिप्रयर रामा मन्दिर, पांजाल अय्यप्पनकाउ मन्दिर, गुरुवायूर श्री कृष्णा मन्दिर, पथानामथिट्टा जिले में– अर्नामुला श्री विष्णु मन्दिर, परुमाला वालिया पनयन्नारकाउ देवी मन्दिर, अडूर श्री महाविष्णु मन्दिर इसी प्रकार से पालक्काड, मालाप्पुरम्, कोझीकोड, त्रिवेन्द्रम आदि अन्य जिलों के मन्दिरों में उत्कृष्ट भित्ति–चित्रण किया गया है, जो अपनी एक विशिष्ट पहचान रखते हैं।

केरल ईश्वरीय भूमि के रूप में जाना जाता है। प्राचीन काल से ही यहाँ की संस्कृति अपने में विशेष रही है जिसको सम्पूर्ण भारत में प्रसारित करने हेतु मन्दिरों में चित्रित भित्ति–चित्रों ने मुख्य भूमिका निभाई। केरल में पारम्परिक भित्ति–चित्रों का उद्भव यदि शुरुआत से देखें तो 7वीं/8वीं शती में सबसे प्राचीन भित्ति–चित्र थिरुनंदिकारा गुफा मन्दिर में देखे जा सकते हैं जो कि वर्तमान समय में पड़ोसी राज्य तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में आता है।[1]

एट्टुमान्नूर महादेव मन्दिर, जिला कोट्टयम् (16वीं शती), चित्र सं0–1

यह मन्दिर केरल के कोट्टयम् जिले में स्थित है एट्टुमान्नूर महादेव मन्दिर कोट्टयम् शहर से 11 किमी. की दूरी पर स्थित है जो कि भगवान शिव को समर्पित है।[2] एट्टुमान्नूर महादेव मन्दिर अपने प्राचीन भित्ति–चित्रों के संग्रह के लिये विख्यात है जो कि मन्दिर के मुख्य प्रवेश द्वार के दोनों ओर चित्रित हैं।

[1] Pushpanath, Salim. , *Temples of South India*, p.9, published by © Dee Bee Info.Publication Kottayam, Kerala.

[2] स्वयं सर्वेक्षण, दिनांक 13–जून–2013.

एट्टुमान्नूर महादेव मन्दिर के भित्ति–चित्र 16वीं शती के चित्रित हैं।[1] सभी चित्र फ्रेस्को सेको पद्धति में निर्मित किये गये हैं। यहाँ के भित्ति–चित्रों के विषय में डॉ. आनंद कुमारस्वामी ने अपनी पुस्तक 'An Introduction to India' में वर्णन किया है– केवल यहाँ (एट्टुमान्नूर महादेव मन्दिर) द्रविड़ चित्रकला का प्राचीन उदाहरण मिलता है।

यहाँ गहरे व सपाट रंगों का प्रयोग किया गया है और जो कि कहीं–कहीं सुन्दर छाया प्रकाश के रूप में देखने को मिलता है। चित्रों में अधिकतर लाल, पीले, व कहीं–कहीं सफेद तथा काले रंगो का प्रयोग दर्शनीय है। एट्टुमान्नूर महादेव मन्दिर के भित्ति–चित्रों में सूक्ष्म चित्रण एवं यूरोपीय प्रभाव भी दृष्टव्य है। यहाँ सभी आकृतियाँ अलंकारिक वस्त्राभूषणों से सुसज्जित हैं जिनके चेहरे गोल, नेत्र पूर्ण खुले व कान तक खिचे हुए, नाक लम्बी, पतले अधर तथा चिबुक व गर्दन के बीच का हिस्सा भारी चित्रित किया गया है। यहाँ चित्रों में पशु चित्रण भी हुआ है।

एट्टुमान्नूर महादेव मन्दिर के भित्ति–चित्रों का संयोजन अलंकारिक है। यहाँ चित्र धार्मिक, पौराणिक विषयों में चित्रित किये गये हैं जिनमें विष्णु सर्प शय्या पर लेटे हुए, शिव नृत्य, कृष्ण व गोपियाँ, शिकार के दृश्य, नागराज, शिव उग्रमूर्ति, शिकारी आदि चित्र प्रदर्शित हैं।

त्रिप्रयर रामा मन्दिर, जिला त्रिचुर (लगभग 16वीं शती), चित्र सं0–2

यह मन्दिर केरल के त्रिचुर जिले में है। यहाँ के मुख्य केन्द्र भगवान 'श्री रामास्वामी' है। त्रिप्रयर रामा मन्दिर के भित्ति–चित्र लगभग 16वीं शती के चित्रित हैं।[2] फ्रेस्को पद्धति में भित्ति–चित्र निर्मित हैं। यहाँ वृत्ताकार गर्भग्रह की बाहरी भित्ति पर चित्रांकन कार्य किया गया है। इनमें चित्रों के विषय– भू–देवी व लक्ष्मी जी के साथ विराजमान विष्णु, शिव उग्रमूर्ति, कृष्णलीला, कुबेर कनकाभिषेकम्, श्री राम अश्वमेघ यज्ञ करते हुए, वेंगोपाला आदि हैं।

त्रिप्रयर रामा मन्दिर के भित्ति–चित्र अधिकतर लाल व पीले रंग की आभा में दर्शाये गये हैं। सामान्यतः केरल के मन्दिरों की चित्रण शैली में मुख्य रूप से लाल,

[1] Chaitanya, Krishna., *A History of Indian Painting The Tradition,* p.77, Mumbai, 2011.
[2] Ramchandran, A., *Painted Aboud of Gods Traditions 0f Kerala* , P.177, New Delhi, 2005.

पीला, हरा, सफेद व काले रंग का प्रयोग किया गया है। चित्रों में आकृतियाँ हृष्ट–पुष्ट एवं आकर्षक वेशभूषा में चित्रित हैं। मुख्य रूप से यहाँ अलंकारिकता, त्रि–आयामी प्रभाव, प्रकृति चित्रण एवं आकृतियों में मानव आकृतियाँ व पशु–पक्षी चित्रण में प्रदर्शित किया गया है।

त्रिप्रयर रामा मन्दिर के भित्ति–चित्रों में गहरे व चटक रंग में चित्रित पृष्ठभूमि पर दृश्यों को उनके महत्व अनुसार संयोजित किया गया है।

परुमाला वालिया पनयन्नारकाउ देवी मन्दिर, जिला पथानामथिट्टा (16वीं शती उत्तरार्ध), चित्र सं0–3

परुमाला वालिया पनयन्नारकाउ देवी मन्दिर मन्नार के समीप है जो कि मुख्य रूप से भद्रकाली देवी एवं शिव जी को समर्पित है तथा यहाँ भित्ति–चित्र आयताकार गर्भग्रह की बाहरी भित्ति पर चित्रित किये हैं।[1]

परुमाला वालिया पनयन्नारकाउ देवी मन्दिर जिसे भद्रकाली मन्दिर व पनयन्नारकाउ देवी मन्दिर नाम से भी जाना जाता है तथा इस मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा दुर्वासा ऋषि द्वारा की गयी थी।[2] पनयन्नारकाउ देवी मन्दिर भित्ति–चित्र 16वीं शती उत्तरार्ध के हैं।[3] यहाँ सूखी भित्ति पर चित्रित चित्रों में केरल की लोक परम्पराओं एवं यूरोपीय प्रभाव मॉडलिंग के रूप में स्पष्ट परिलक्षित होता है। इन भित्ति–चित्रों के विषय हिन्दू महाकाव्यों तथा पुराणों से लिये गये हैं जिनमें– पंचमुखी देवी, यशोदा व बालकृष्ण, सिंह पर सवार देवी, नमन करते हुए नारद, महिषासुरमर्दनी आदि।

पनयन्नारकाउ देवी मन्दिर में गहरे व चटक रंगों का प्रयोग किया गया है जिसमें सपाट पृष्ठभूमि पर अलंकरण व छाया प्रकाश के साथ त्रि–आयामी प्रभाव देती आकृतियों का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। चित्रों में लाल, पीला, हरा व काला रंग अधिक तथा कहीं–कहीं सफेद रंग प्रयोग किया गया हैं। यहाँ आकृतियों का शारीरिक गठन बलिष्ठ रेखाऐं तथा सीमा रेखा मोटी व अलंकारिक है। चित्रों में सम्पूर्ण चित्र संयोजन अत्यन्त लयात्मक, अलंकारिक तथा आकर्षक भाव–भंगिमायुक्त दर्शाया गया है।

---

[1]स्वयं सर्वेक्षण, दिनांक 15–जून–2013.

[2]स्वयं साक्षात्कार, *श्री शशि यम्ब्राम्दी तथा श्री रंजन अदिस्सार द्वारा* दिनांक 15–जून–2013.

[3] Ramchandran, A., *Painted Aboud of Gods Traditions 0f Kerala* , P.279, New Delhi, 2005.

पुण्डारिकापुरम् विष्णु मन्दिर, जिला कोट्टयम् (17वीं शती), चित्र सं0–4

पुण्डारिकापुरम् विष्णु मन्दिर मिदय्यीकुन्नम् नामक छोटी–सी पहाड़ी पर वेंकम मार्ग में कोट्टयम् जिले में स्थित है एवं यह मन्दिर भगवान विष्णु को समर्पित है।[1] यहाँ चित्रों के विषय धार्मिक पौराणिक कथाओं पर आधारित हैं। पुण्डारिकापुरम् विष्णु मन्दिर के भित्ति–चित्र 17वीं शती के हैं तथा यह मन्दिर नम्बूदरी ब्राह्मण परिवार द्वारा स्थापित कराया गया।[2] यह चित्र केरल की पारम्परिक भित्ति–चित्रण शैली पर आधारित हैं। इनमें चटक रंगों का अधिक प्रयोग हुआ है जिसमें लाल, हरा तथा पीला रंग प्रमुख है। मन्दिर के भित्ति–चित्र वर्गाकार गर्भग्रह की बाहरी भित्ति पर फ्रेस्को सेको पद्धति में चित्रित किये गये हैं। यहाँ भित्ति–चित्र अलंकृत सीमा रेखा द्वारा चित्रित है।

पुण्डारिकापुरम् विष्णु मन्दिर के भित्ति–चित्रों में आकृतियों के चेहरे गोल व अधिकतर मुस्कराते हुए तथा चिबुक व गर्दन का हिस्सा भारी बनाया गया है । आकृतियों के नेत्र कहीं–कहीं पतले, लम्बे कान तक खिंचे कहीं सामान्यतः से ज्यादा खुले चित्रित किये गये हैं। भाव–भंगिमाऐं प्रभावयुक्त हैं। इन भित्ति–चित्रों में रंगों द्वारा सुन्दर छाया प्रकाश दिखाया गया है। चित्रों में आकृतियाँ सुन्दर वस्त्राभूषणों में हैं।

पुण्डारिकापुरम् विष्णु मन्दिर में चित्रों के विषय– शास्ता के अनुयायी, अर्द्धनारीश्वर, हरिहर, दुर्गा महिषासुरमर्दिनी, रामपट्टाभिषेकम्, वेंगोपाला आदि हैं।

वेंकम महादेव मन्दिर, जिला कोट्टयम् (18वीं शती उत्तरार्ध),चित्र सं0–5 तथा 8

यह मन्दिर केरल के कोट्टयम् जिले में है जहाँ का मुख्य केन्द्र भगवान विष्णु हैं एवं यहाँ के भित्ति–चित्र वृत्ताकार गर्भग्रह की बाहरी शुष्क भित्ति पर चित्रित किये गये हैं तथा इन चित्रों के साथ मूर्तिकला का भी सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है।[3] वेंकम महादेव मन्दिर लगभग तीन हजार वर्ष प्राचीन निर्मित है तथा यहाँ के भित्ति–चित्र 18वीं शती उत्तरार्ध के हैं।[4] वेंकम महादेव मन्दिर में धार्मिक, पौराणिक विषयों पर चित्रण किया गया है जिसमें– अर्द्धनारीश्वर, श्री राम व वानरगण, बाल गणेश व पार्वती, हनुमान जी पर्वत लिये,

---

[1] स्वयं सर्वेक्षण , दिनांक 14–जून–2013.

[2] स्वयं साक्षात्कार ,*श्री नारायण नम्बूदरी वय्यर द्वारा,* दिनांक 14–जून–2013.

[3] स्वयं सर्वेक्षण , दिनांक 14–जून–2013.

[4] स्वयं साक्षात्कार , *श्री टी. एल. कुमार अय्यर द्वारा,* दिनांक 14–जून–2013.

विष्णु–लक्ष्मी एवं युद्ध सम्बन्धित चित्र भी चित्रित किये गये हैं। यहाँ सपाट पृष्ठभूमि पर त्रि–आयामी प्रभाव देते हुए नारंगी आभायुक्त रंगों का प्रयोग किया गया है। चित्रों में रेखाऐं लयात्मक एवं सीमा रेखा अलंकारिक व अपेक्षाकृत मोटी चित्रित की गई है। वेंकम महादेव मन्दिर में चित्र संयोजना अत्यन्त सजावटी है।

पाण्डवाथ शास्ता मन्दिर, जिला कोट्टयम् (18वीं शती), चित्र सं0–6 तथा 7

यह मन्दिर अयमनम् गाँव में कोट्टयम् नगर से 4 किमी. की दूरी पर स्थित है जो कि श्री शास्ता देवता को समर्पित है तथा यहाँ भित्ति–चित्रों को वर्गाकार गर्भग्रह की बाहरी दीवारों के चारों ओर चित्रित किया गया है।[1] यहाँ भित्ति–चित्र केरल की पारम्परिक भित्ति–चित्रण शैली में चित्रित किये गये हैं। इन भित्ति–चित्रों के निर्माण में सूखी भित्ति का प्रयोग किया गया है। पाण्डवाथ शास्ता के भित्ति–चित्र 18वीं शती के चित्रित हैं।[2] पाण्डवाथ शास्ता मन्दिर 996 वर्ष प्राचीन है तथा यह मन्दिर चेरा साम्राज्य के अर्न्तगत निर्मित हुआ एवं वर्तमान में यह मन्दिर त्रावणकोर देवासम बोर्ड के संरक्षण में हैं।[3]

यहाँ चटक रंगों का प्रयोग किया गया है जिसमें लाल तथा हरा रंग प्रमुख है। यहाँ चित्रों में बाह्रय रेखा मोतीनुमा अलंकरण से सुसज्जित है जो कि प्रबल भाव संयोजना द्वारा चित्र के रिक्त स्थान को घेरे हुए है। यहाँ भित्ति–चित्रों में आकृतियाँ छोटी, स्थूल रूप में चित्रित की गईं हैं। अधिकतर आकृतियाँ मुस्कराती हुई प्रदर्शित हैं।

पाण्डवाथ शास्ता मन्दिर के भित्ति–चित्रों में रंगों द्वारा छायाप्रकाश का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। सम्पूर्ण चित्रों में आकृतियाँ अत्यधिक अलंकृत वस्त्राभूषणों को धारण किये हुए दर्शायी गयी हैं।

पाण्डवाथ शास्ता मन्दिर में कार्तिकेय, शास्ता शिकार करते हुए, पूजा करने जाते लोग, बालकृष्ण तोते के साथ,वेंगोपाला,दक्षिणामूर्ति आदि भित्ति–चित्रों का अंकन किया गया है। तुलनात्मक दृष्टि से कोट्टयम्, त्रिचुर एवं पथानामथिट्टा उल्लेखित इन मन्दिरों में समानताऐं व असमानताऐं दोनों देखने को मिलती हैं। कोट्टयम् के वेंकम महादेव मन्दिर, पाण्डवाथशास्ता मन्दिर, पुण्डारिकापुरम् विष्णु मन्दिर, त्रिचुर के त्रिप्रयर रामा मन्दिर

---

[1]स्वयं सर्वेक्षण, दिनांक 13–जून–2013.

[2] Ramchandran, A., *Painted Aboud of Gods Traditions 0f Kerala* , P.427, New Delhi, 2005.

[3]स्वयं साक्षत्कार, *श्री इन्द्रा सान्थि द्वारा,* दिनांक 13–जून–2013.

तथा पथानामथिट्टा के परुमाला वालिया पनयन्नारकाउ देवी मन्दिर इन सभी मन्दिरों की स्थापत्यकला द्रविड़ शैली में निर्मित है।

यहाँ मन्दिरों में भित्ति–चित्र अधिकतर गर्भग्रह की बाहरी भित्ति पर चित्रित हैं परन्तु कोट्टयम् स्थित एट्टुमान्नूर महादेव मन्दिर में भित्ति–चित्र प्रवेश द्वार के दोनों ओर हैं जबकि गर्भग्रह की बाहरी दीवार पर सुन्दर काष्ठ मूर्तिकला का अंकन प्रदर्शित है। यहाँ मन्दिरों में भित्ति–चित्र केरल की पारम्परिक चित्रण शैली में ही चित्रित किये गये हैं जिनमें कई शैलियों का प्रभाव दृष्टव्य है। इन सभी मन्दिरों के भित्ति–चित्रों में वनस्पतिक एवं खनिज रंगों का प्रयोग हुआ है। कोट्टयम्, त्रिचुर एवं पथानामथिट्टा स्थित मन्दिरों में गर्भग्रह वर्गाकार, आयताकार तथा कुछ वृत्ताकार में निर्मित हैं। केरल के इन मन्दिरों के भित्ति–चित्र भारतीय चित्रकला में अपनी प्रमुख विशेषता रखते हैं।

दिनांक.................

शोध छात्रा

अंशुली शुक्ला

Bibliography

1. Coomaraswamy, A. K. *The techniques and theory of Indian Painting,* Technical Studies, III , 2, Combridge, Mass. , 1934.

2. Kramrisch, Stella. *Dravida and Kerala in the art of Travancore,* Ascona, 1953.

3. Chaitanya, Krishna. *A history of Indian Painting the Mural Tradition,* First published 1976, K . K Nair published by Shakti Malik Abhinav publication E37 Hauzkhas, New Delhi.

4. Hunting, Susan L. *The Art of Ancient India Buddhist*, Hindu,Jain. Published by: wether hill, Inc , of Newyork & Tokyo. Printed in Hongkong. First Edition:1985, second printing, 1993. ISBN 0-8348-0183-3

5. Menon, A. Sreedhara. *Cultural Heritage of Kerala*, published & printed by D.C.Books, Kottayam, Kerala, 2008. ISBN 978-81-264-1903-6

6. Menon, Vijayakumar. *A Brief Survey of the Art Scennario of Kerala,* (International centre Kerala Studies, Karyavattom)2006. ISBN: 8187590092, 9788187590095

7. Nagpal, J. C. *Mural painting in India* , Mrs Gayatri Garg for Gian Publishing house, Delhi, 1988. ISBN: 81-212-0149-7

8. Pushpanath, salim. *Temples of South India*, published by Dee Bee Info.Publication Kottayam, Kerala.Printed in Malaysia. ISBN 978-81-88000-19-7

9. Ramachandran, A. *Painted Abode of Gods Murals Traditions of Kerala*, published by Indira Gandhi National Centre For the Arts, Vadehra Art Gallery, New Delhi Printed by Brijbasi art press Ltd. A-81, Secto -v, Noida. 201301 , U. P., India, 2005. ISBN:8-7737-07-7

10. Reddy, V. V. Subha. *Temples of south India*, published by Gyan Book pvt. Ltd. New Delhi, 2009. ISBN 978-81-212-10225

11. Sarkar, H. *An Architectural Survey of Temples of KERALA*,© Archaeological Survey of India,1978. Published by The director General,

Archaeological Survey of India , New delhi, printed at the Naba Mudram pvt. Ltd. Calcutta.

12. Sasi bhooshan, M.G. *Murals of Kerala*, (Department of public Relations, Thiruvananthapuram) 1987.

13. Seth, Mira. *Indian painting the Grate Mural Tradition*, First Publishing in India in 2006. Mapin publishing Pvt Ltd. 31 Somnath Road, Usmanpura Ahmedabad, India. ISBN 81-88240-74-9

14. Singh, Sarina. *South India* , published by Lonely Planet publications pvt. Ltd. Printed in Singapore, 5th edition published sep. 2009, first published nov. 1998. ISBN 978-1-74179-155-6

15. Sivaramamurthi, C. *Indian painting*, (National Book Trust, India) Reprint, 2002 published by The Director, Publications Division, Ministry of information and Broadcasting Govt. of India, New Delhi. First published in 1968, first reprint 1994. ISBN 81-230-0052-9

16. Vincent, M.A. *District Handbook of Kerala- KOTTAYAM,* published by: Depart -ment of Information and Relations Govt. of Kerala, 2003.

17. Vaidyanathan, K. R. *Temples and Legends of Kerala* published by Bhartiya Vidya Bhavan,Mumbai.1st edition:1982, 2nd edition:1983, 3rd edition: 1996, 4th edition: 200, 5th edition: 2011. ISBN 81-7276-379-4

पत्र / पत्रिकाऐं

- माम्मन मात्यु, मनोरमा इयर बुक, मलयाला मनोरमा कम्पनी लिमिटेड द्वारा मलयाला मनोरमा प्रेस, कोट्टयम् से सम्पादित, मुद्रित एवम् प्रकाशित, 2011.
- एन. एन. ओझा, क्रॉनिकल इयर बुक, क्रॉनिकल पब्लिकेशंस (प्रा0) लि.ओखला, दिल्ली, 2008.

चित्र नं.–1, शिव उग्रमूर्ति, एट्टुमान्नूर महादेव मन्दिर, जिला कोट्टयम् (16वीं शती)[1]

चित्र नं–2, अश्वमेघ यज्ञ, त्रिप्रयर रामा मन्दिर, जिला त्रिचुर (लगभग 16वीं शती)[2]

---

[1]स्वयं सर्वेक्षण, दिनांक 13–जून–2013.

[2]Ramchandran, A., *Painted Aboud of Gods Traditions 0f Kerala* , P.200, New Delhi, 2005.

चित्र नं–3, यशोदा व बालकृष्ण, परुमाला वालिया पनयन्नारकाउ देवी मन्दिर, जिला पथानामथिट्टा (16वींशती उत्तरार्ध)[1]

चित्र नं–4, खजूर के वृक्ष पर चिड़ियां व गिलहरी, पुण्डारिकापुरम् विष्णु मन्दिर, जिला कोट्टयम् (17वीं शती)[2]

[1] वही, पृष्ठ सं.39.
[2] वही, पृष्ठ सं.114.

चित्र नं–5, श्री राम युद्ध की अवस्था में, वेंकम महादेव मन्दिर, जिला कोट्टयम्

(18वीं शती उत्तरार्ध)[1]

चित्र नं– 6, दक्षिणामूर्ति, पाण्डवाथ शास्ता मन्दिर, जिला कोट्टयम् (18वीं शती)[2]

---

[1] स्वयं सर्वेक्षण, दिनांक 14–जून–2013.

[2] Ramchandran, A., *Painted Aboud of Gods Traditions 0f Kerala* , P.125, New Delhi, 2005.

चित्र सं0– 7, पाण्डवाथ शास्ता मन्दिर में पं0 श्री इन्द्रा सान्थि, श्री सुनील सान्थि, श्री शशि सान्थि (बायें से दायें) के साथ स्वयं[1]

चित्र सं0–8, वेंकम महादेव मन्दिर में पं0 श्री टी.एल.कुमार अय्यर (मध्य में) के साथ स्वयं[2]

[1] स्वयं सर्वेक्षण, दिनांक 13–जून–201

[2] स्वयं सर्वेक्षण, दिनांक 14–जून–2013